~~वैदिक संस्कृति~~

मुगल साम्राज्य

Lecture given by -

Mamta Rani

Guest Assistant Professor

Deptt. of History.

SNSRKS College, Saharsa,

Bihar.

खान-ए-जहाँ लोदी का विद्रोह तथा शाहजहाँ की दक्कन नीति (1631-36) :-

खान-ए-जहाँ लोदी दक्कन में मुगल सूबेदार था किन्तु वह अहमदनगर का शासक मुर्तजा निजाम शाह से मिल गया तथा मुगलों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। अतः शाहजहाँ ने उसे कठोरतापूर्वक दण्डित किया। तभी शाहजहाँ इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अब दक्कन की समस्या का एक मात्र समाधान यह है कि अहमदनगर का नामो निशान मिटा दिया जाय। अतः उसने 1633 में अहमद नगर को जीत लिया। तभी वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जबतक अहमदनगर पर मुगल विजय को बीजापुर का अनुमोदन प्राप्त नहीं हो जाता तबतक उसे दक्कन में बैधता नहीं मिलेगी। अतः उसने बीजापुर के प्रति छड़ी एवं पुरस्कार की नीति अपनायी तथा उसके समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि अगर वह अहमदनगर पर मुगल विजय को मान्यता दे देता है तो उसे अहमदनगर का 1/3 भू-भाग पुरस्कार में दिया जाएगा किन्तु अगर वह उसे मानने से इन्कार करता है तो स्वयं उसका भी नामो-निशान मिटा दिया जाएगा। अतः 1636 में, मुगल साम्राज्य, बीजापुर और गोलकुण्डा के बीच एक ऐतिहासिक संधि हुई। इस संधि में निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रावधान थे, प्रथम, अहमद नगर के 1/3 भू-भाग बीजापुर को प्राप्त हो गया

मौद्रिक उतार-चढ़ाव

इसकाल में यूरोपीय व्यापार के कारण यूरोप से बड़ी मात्रा में चाँदी का आगमन हो रहा था इस चाँदी का एक भाग या तो सिक्कों के रूप में ढाल दिया जाता था या फिर कीमती धातु के रूप में सुरक्षित रखा जाता था इससे मुद्रा स्फीति को प्रोत्साहन मिला इस कारण से जागीरदारी का रहन-सहन महंगा हो गया एवं ये जागीरदारों के द्वारा किसानों से अधिक वसूलने का प्रयत्न करने लगे इससे किसानों पर दबाव बढ़ गया।

17वीं सदी में बार-बार पड़ने वाले अकाल :

फिर यह वही काल है जब बार-बार अकाल पड़ रहे थे इन अकालों के कारण भी किसानों पर दबाव बढ़ रहा था अतः अनेक समय भू-राजस्व की अदायगी की चुनौती खड़ी हो गयी।

कृषि संकट की अभिव्यक्ति

राजस्व दबाव के कारण या तो किसान खेत छोड़कर भागने लगे या फिर जमींदारों के साथ मिलकर अथवा स्वतंत्र रूप में राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने लगे यथा - जाट विद्रोह, सतनामी विद्रोह आदि।

हिंदु कुलीनों के प्रति अकबर की नीति :

स्वायत्त शासकों को मनसबदारी व्यवस्था में शामिल करना तथा छोटे जमींदारों को भूराजस्व व्यवस्था

किन्तु निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर अन्धकार युग की अवधारणा का खंडन किया जा सकता है।

(i) हमारा ध्यान केवल मुगल साम्राज्य पर ही केंद्रीत नहीं होना चाहिए अपितु हमें प्रान्तीय शासकों की ओर भी देखना चाहिए। वस्तुतः हमें यह ज्ञात है कि इस काल में मुगल साम्राज्य के विघटन के बाद बंगाल, अवध तथा हैदराबाद जैसे राज्यों में उत्तराधिकारी सरकारों की स्थापना हुई थी और इन सरकारों ने अपने-अपने क्षेत्र में बेहतर शासन व्यवस्था कायम की।

(ii) इस काल को आर्थिक अवनति का काल नहीं माना जा सकता यह काल आर्थिक समृद्धि का काल था। यह वह काल है जबकि नकदी फसलों की खेती का विस्तार हुआ था तथा यूरोपीय व्यापार के कारण भारत में बड़ी मात्रा में चाँदी का आगमन हो रहा था।

(iii) फिर हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि भले ही राजनीतिक दृष्टि से मुगल साम्राज्य विघटित हो रहा था किन्तु क्षेत्रीय स्तर पर मुगल संस्कृति का व्यापक प्रसार हो रहा था। क्षेत्रीय स्तर पर मुगल कला के कई महत्वपूर्ण केंद्र कायम हो गये थे मुगल कला ने राजपूत कला, पहाड़ी-गढ़वाल चित्र शैली, सिख चित्रकला आदि पर अपना प्रभाव छोड़ा मृत्य कला में व्यक्ति की प्रतिष्ठा बढ़ने लगी, ध्रुपद गायन को बल मिला। लखनऊ मुगल कला का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।